(40)

# UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY.
## HALDWANI, NAINITAL

The report should be sent (in the sealed envelope) to the Exam Controller, Uttarakhand Open University. Teen pani Bypass Road, Haldwani (Nainital ) -263139.

**UOU/Research/Education /2023/01** **DATE: 26/07/2023**

**PROFORMA FOR THE WRITING Ph. D. THESIS REPORT**

1- Name of the Candidate Shri Kamal Chandra Gahtori , Registration No. 20206068".
2- Subject: Education
3- Name of the Doctorate Degree: Ph. D.
4- Title of thesis : topic **"स्वातंत्र्योत्तर भारत में गठित शिक्षा नीतियों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा का समालोचनात्मक अध्ययन "**
5. Name of the examiner with full postal address ***Prof. Manoj K Saxena, Compus Director, Head & Dean ( Education ), Central University of Himachal Pradesh, Dhauladhaar Campus-I Dharamshala- 176215***

**Note** – Under the ordinance relating to Doctorate Degree a thesis shall comply with the following conditions and the examiners are requested that in case they approve of a thesis for the degree, is should be definitely mentioned in the report that the thesis complies with these requirements.

**(a)** It must be a piece of research work characterized either by the discovery of facts or by a fresh approach towards the interpretation of facts or theories. In either case it should evince the candidate's capacity for critical examination and sound judgment.

**(b)** It shall be satisfactory in point of language and presentation of subject matter. The examiners will also indicate whether the thesis is suitable for publication in its present form with or without amendments.

**IMPORTANT**

The Examiner is requested to recommend definitely weather.

(a) The candidate is admitted to the degree. ✓

Or

~~(b)~~ The candidate should improve and resubmit the thesis.

Or

~~(c)~~ The thesis should be rejected.

**REPORT**

Dated 25.08.2023

Please see the attached detailed report

(If necessary blank sheets may be added to complete the report)

(Signature of the Examiner) 30.08.2023

(39)

## परीक्षक की रिपोर्ट

| | |
|---|---|
| शोधकर्ता का नाम | श्री कमल चन्द्र गहतोड़ी |
| विषय | शिक्षा शास्त्र |
| शोध प्रबंध का शीर्षक | "स्वातंत्र्योत्तर भारत में गठित शिक्षा नीतियों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक-शिक्षा का समालोचनात्मक अध्ययन" |
| निर्देशक का नाम | डॉ कल्पना पाटनी लखेड़ा<br>सह-अध्यापक, शिक्षा विभाग<br>उत्तराखंड मुक्त विश्वविध्यालय,<br>हल्द्वानी, उत्तराखंड |

शोधार्थी श्री कमल चन्द्र गहतोड़ी ने "स्वातंत्र्योत्तर भारत में गठित शिक्षा नीतियों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक-शिक्षा का समालोचनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया है। यह शोध अध्ययन डॉ कल्पना पाटनी लखेड़ा द्वारा वैज्ञानिक द्रष्टिकोण से निर्देशित किया गया है । प्रस्तुत शोध ग्रन्थ विधिवत रूप से तैयार किया गया है तथा उचित रूप से प्रस्तुत किया गया है।

**अध्यायकरण एवं इनकी क्रमबद्धता**

प्रस्तुत शोध प्रबंध का संकलन पांच अध्यायों में किया गया है यह ।पांच अध्याय निम्नलिखित क्रम में प्रस्तुत किये गए हैं।

प्रथम अध्याय -प्रस्तावना एवं शैक्षिक शोध का संक्षिप्त परिचय

द्वितीय अध्याय -सम्बंधित साहित्य की समीक्षा

तृतीय अध्याय -भारतीय शिक्षा प्रणाली एवं शिक्षक-शिक्षा

चतुर्थ अध्याय- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 एवं शिक्षक-शिक्षा

पंचम अध्याय -परिणाम, शैक्षिक निहितार्थ एवं भावी शोध हेतु सुझाव

उपरोक्त सभी अध्याय उपयुक्त क्रम में प्रस्तुत किये गए हैं तथा शोध प्रबंध के अंत में सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि एवं परिशिष्ट भी संलग्न हैं ।

प्रथम अध्याय में शोधार्थी ने अध्यापक शिक्षा की अवधारणा का वर्णन प्रस्तुत किया है। शोधार्थी ने भारत में अध्यापक शिक्षा के विकास के क्रम को भी विस्तार में प्रस्तुत किया है। इस अध्याय में शोध का महत्व, समस्या कथन, अध्ययन के उद्देश्य तथा शोध प्रश्न तथा शोध

प्रक्रिया का संक्षिप्त विवरण आदि को दर्शाया गया है। प्रस्तुत शोध में विवरणात्मक तथा समालोचनात्मक शोध विधियों का प्रयोग किया गया है। शोधकर्ता ने प्रदत्तो का संकलन करने के लिए 'स्वनिर्मित शिक्षक -शिक्षा आधारित प्रश्नावली' तथा अभिलेखीय विश्लेषण के लिए विभिन्न शैक्षिक दस्तावेजों, शोध ग्रंथों तथा शोध आलेख आदि का अध्ययन किया है।

**दित्तीय अध्याय** में सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा की गयी है। इस अध्याय में सम्बन्धित साहित्य को शोध की आवश्यकतानुसार संकलित किया गया हैं। शोधार्थी ने विदेशी तथा भारतीय साहित्यों की समीक्षा को अलग अलग प्रस्तुत किया है। अध्याय के अंत में सम्बंधित शोध साहित्य के अध्ययन का सर प्रस्तुत किया है।

**तृतीय अध्याय** में शोधार्थी ने बौद्धिक काल से स्वतंत्र भारत काल तक शिक्षक शिक्षा के प्रादुर्भाव का व्यापक वर्णन किया है। प्रस्तुत अध्याय में शोधार्थी ने स्वतंत्र भारत में गठित विभिन्न शिक्षा अयागों एवं समितियों में शिक्षक-शिक्षा सम्बन्धी प्रावधानों के कार्यान्वयन का समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।स्वनिर्मित प्रश्नावाली के माध्यम से शोधकर्ता ने 732 प्रतिभागियों का विवरण प्रस्तुत किया है ।शोधकर्ता ने प्रतिभागियों के चयन हेतु प्रयुक्त न्यादर्श विधि को सूचित नहीं किया है। तथा शोधकर्ता द्वारा तालिका संख्या -3.6 में दर्शाये जाने वाले उत्तरदाताओं की श्रेणी को विस्तार से दर्शना उचित होता।

**चतुर्थ अध्याय** में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में अध्यापक शिक्षा हेतु की गयी अनुशंसाओं का वर्णनं किया गया है तथा शिक्षक-शिक्षा के प्रावधानों का समालोचनात्मक अध्ययन, अध्यापक शिक्षा के विभिन्न आयाम आदि प्रस्तुत किये गए हैं। प्रस्तुत अध्याय में शोधार्थी ने शोध प्रदत्तों का विश्लेषण तथा निष्कर्षों को दर्शाया है।

**पन्चम अध्याय** में शोधार्थी ने शोध सारांश शोध के निष्कर्षों तथा शोध के परिणामों एवं को प्रस्तुत किया है जो आकड़ों के विश्लेषण पर आधारित हैं ।इस अध्याय में शोधार्थी ने भावी शोधकर्ताओं हेतु शोध के संभावित क्षेत्र को भी प्रस्तुत किया है

**सन्दर्भ सूची के सन्दर्भ में विचार:**

संदर्भ सूची को शोध प्रबंध के अंत में प्रस्तुत किया गया है तथा शोधकर्ता के द्वारा सभी संदर्भो को संदर्भ सूचि में उपयुक्त ए. पी. ए. प्रारूप में सुनिश्चित किया गया है ।शोध ग्रन्थ के अंत में परिशिष्ट को संलग्न किया गया है।

सार एवम् संस्तुति

प्रस्तुत शोध ग्रन्थ के अध्ययन से यह प्रतीत होता है कि शोधार्थी ने इस कार्य को पूर्ण निष्ठा से प्रस्तुत किया है ।व्याकरण की टंकण की द्रष्टि से प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में कुछ त्रुटियाँ है, जो नगण्य है । शोध के निष्कर्ष अध्यापक- शिक्षा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं ।शोध का प्रकरण वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिक प्रतीत होता है । प्रस्तुत शोध ग्रन्थ का अध्ययन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि शोधार्थी ने संतोषजनक शोध कार्य किया है। अत: अधोहस्ताक्षरकर्ता इस शोध ग्रन्थ के आधार पर यह अनुशंसा करते हैं कि श्री कमल चन्द्र गहतोड़ी को शोध ग्रन्थ पर सफल मौखिकी परीक्षा के उपरान्त उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी की पी.एच.डी. उपाधि से अलंकृत किया जा सकता है।

प्रोफ़ेसर मनोज कुमार सक्सेना
अधिष्ठाता एवं विभागाध्यक्ष
शिक्षा स्कूल
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
धौलाधार परिसर - 1
धर्मशाला - 176215
(हिमाचल प्रदेश)

(36)

UTTARAKHAND OPEN UNIVERSITY,
HALDWANI, NAINITAL

The report should be sent (in the sealed envelope) to the Exam Controller, Uttarakhand Open University, Teen pani Bypass Road, Haldwani (Nainital ) -263139.

**DATE: 26/07/2023**

**UOU/Research/Education /2023/01**

**PROFORMA FOR THE WRITING Ph. D. THESIS REPORT**

1- Name of the Candidate Shri Kamal Chandra Gahtori , Registration No. 20206068".
2- Subject: Education
3- Name of the Doctorate Degree: Ph. D.
4- Title of thesis : topic **"स्वातंत्रयोत्तर भारत में गठित शिक्षा नीतियों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा का समालोचनात्मक अध्ययन "**
5. Name of the examiner with full postal address ***Prof. Rajni Ranjan Singh, Professor & Head Education Dept. Dr. Shakuntala Misra , Netional Rehabilitation University, Lucknow UP***

**Note** – Under the ordinance relating to Doctorate Degree a thesis shall comply with the following conditions and the examiners are requested that in case they approve of a thesis for the degree, is should be definitely mentioned in the report that the thesis complies with these requirements.

**(a)** It must be a piece of research work characterized either by the discovery of facts or by a fresh approach towards the interpretation of facts or theories. In either case it should evince the candidate's capacity for critical examination and sound judgment.

**(b)** It shall be satisfactory in point of language and presentation of subject matter. The examiners will also indicate whether the thesis is suitable for publication in its present form with or without amendments.

**IMPORTANT**

The Examiner is requested to recommend definitely weather.

✓ (a) The candidate is admitted to the degree.

Or

~~(b) The candidate should improve and resubmit the thesis.~~

Or

~~(c) The thesis should be rejected.~~

**REPORT**

Dated 24.08.23

[signature] 24.08.23
(Signature of the Examiner)
(Prof. R. R. Singh)

(If necessary blank sheets may be added to complete the report)

**पी–एच0 डी0 (शिक्षाशास्त्र) शोध प्रबंध शीर्षक "स्वातंत्र्योत्तर में गठित शिक्षा नीतियों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक–शिक्षा का समालोचनात्मक अध्ययन" की विस्तृत आख्या**

पी–एच0 डी0 (शिक्षाशास्त्र) शोध प्रबंध–**"स्वातंत्र्योत्तर में गठित शिक्षा नीतियों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक–शिक्षा का समालोचनात्मक अध्ययन"** शीर्षक पर शोधार्थी कमल चन्द्र गहतोड़ी के द्वारा किया गया कार्य उत्तम है। इन्होंने अपना यह शोध कार्य शोध पर्यवेक्षक डॉ. कल्पना पाटनी लखेड़ा, असिस्टेन्ट प्रोफेसर (शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा) उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय हल्द्वानी (नैनीताल) के मार्गदर्शन में पूरा किया है। इस शोध प्रबंध में पांच अध्याय–शोध परिचय, सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण, अध्ययन की अभिकल्पना, आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या, सारांश एवं निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव हैं।

**प्रथम अध्याय में** अध्ययन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। जिसमें मुख्य रूप से अध्यापक–शिक्षा को वस्तुतः एक वृत्ति के रूप में जिसमें ज्ञान, कौशल, व योग्यता का सम्बन्ध शिक्षकों द्वारा आपने व्यावसायिक उत्तरदायित्वों को सक्षमता व प्रभावी ढंग से निभाने से होता है। तात्पर्य है कि यह शिक्षकों की अभिवृत्तियों, अभ्यासों, व्यवहार व व्यक्तित्व को पुनः आकार प्रदान करने का कार्य करने वाली व्यवस्था होनी चाहिए। परन्तु स्थितियाँ इसके विपरीत हैं। अध्यापक–शिक्षा की संकल्पना केवल नीतिगत प्रश्न बनकर रह गयी हैं। आंशिक परिवर्तन को छोड़ दिया जाय तो सुझावों की एक लम्बी श्रृंखला के बीच सकारात्मक प्रयासों का व्यवहारगत क्रियान्वयन आज भी हासिए पर है, जिस कारण शिक्षक–शिक्षा के उन्नयन की कल्पना जस की तस बनी हुयी है।

समस्या के इसी क्षेत्र को प्रतिबिम्बित करते हुए शोधार्थी द्वारा अपने शोध क्षेत्र का चुनाव किया गया, जिसका शीर्षक है– **"स्वातंत्र्योत्तर में गठित शिक्षा नीतियों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक–शिक्षा का समालोचनात्मक अध्ययन"** अध्ययन को पूरा करने के लिए 07 शोध प्रश्न, 07 मुख्य उद्देश्य जिससे कि उन्हें वैज्ञानिक ढंग से परीक्षण किया जा सके।

**द्वितीय अध्याय** सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण शोधार्थी द्वारा चयनित शोध शीर्षक को आधार मानते हुए शिक्षक–शिक्षा के पुरातन स्वरूप से लेकर अद्यतन प्रयासों तक एक विस्तृत शोध अध्ययन किया है, जिसमें विदेशी शोध अध्ययन एवं भारत में किये गये महत्वपूर्ण शोध अध्ययन सम्मिलित हैं।

**तृतीय अध्याय** में अध्ययन की अभिकल्पना को प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा स्वतंत्र भारत के परिप्रेक्ष्य में भारत सरकार द्वारा समय–समय पर गठित शिक्षा आयोगों, नीतियों एवं समितियों के व्यापक विश्लेषण हेतु दो प्रकार की शोध विधियों यथा विवरणात्मक (Descriptive) एवं समालोचनात्मक (Critical) विधियों का प्रयोग किया गया है।

**आंकड़ों के स्रोत के रूप में** प्राथमिक स्रोत– शोध निर्देशिका के सहयोग से एक **"स्वनिर्मित शिक्षक–शिक्षा आधारित प्रश्नावली"** (पूर्व निर्देशित स्वरूप) तैयार की गयी है जबकि द्वितीयक स्रोत

के रूप में **अभिलेखीय विश्लेषण** (शोध शीर्षक पर आधारित विभिन्न शासकी दस्तावेज, शिक्षा अधिनियम, शैक्षिक दस्तावेज, विषय से सम्बन्धित शोध ग्रन्थ, शोध आलेख, नियम, सांख्यिकीय प्रदत्त तथा जनांकिकी प्रदत्त आदि) आदि को आधार बनाया गया है।''

अध्ययन से सम्बन्धित उपलब्ध साहित्य रिकार्डस एवं दस्तावेज, प्रकाशित रिपोर्टस आदि शोध विश्लेषण में सहायक रहे हैं। साथ ही शिक्षक–शिक्षा की सम्पूर्ण नीतिगत प्रक्रिया से सम्बन्धित प्रश्नावली के माध्यम से विभिन्न शैक्षिक संवर्गो के मतों का संग्रह एवं अनुभव शोध के गुणात्मक विश्लेषण में महत्पूर्ण कारक के रूप में प्रयुक्त किये गये है। शोधार्थी द्वारा इस हेतु शोध निर्देशक के सहयोग से ''स्व–निर्मित प्रश्नावली द्वारा शोध की सुगमता हेतु निर्दिष्ट एक व्यापक सर्वेक्षण किया गया। प्रश्नावली में शिक्षक–शिक्षा से सम्बन्धित विभिन्न हितधारकों को सम्मिलित करते हुए दस (10) विशिष्ट शोध प्रश्नों/विचारों पर हितधारकों की प्रतिक्रिया जानने के प्रयास किये गये हैं।'' इस हेतु Likert 5-Rating Scale की सहायता ली गयी है। प्रश्नावली के उत्तरदाताओं के रूप में उत्तराखण्ड सहित भारत के विभिन्न राज्यों से निम्नांकित लक्ष्य–समूह को सम्मिलित किया गया है यथा –

प्राथमिक स्तरीय/माध्यमिक स्तरीय शिक्षक एवं प्रवक्ता, डायट/एस.सी.ई.आर.टी./सीमेट के संकाय सदस्य, विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों के शिक्षा शास्त्र सम्बन्धी संकाय सदस्य/व्याख्याता/सहा. प्रोफेसर/प्रोफेसर, सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षु (डी.एल.एड.छात्र/छात्राएँ), बी.एड./एम.एड. प्रशिक्षु शिक्षा शास्त्र से सम्बन्धित शोधार्थी, विभिन्न शिक्षण संस्थानों के प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य/संस्था प्रमुख शिक्षाविद, शिक्षा अधिकारी एवं अन्य।

**चतुर्थ अध्याय** शोध उदाहरणों की पूर्ति के लिए आंकड़ों की व्याख्या एवं विश्लेषण वैज्ञानिक तरीके से किया गया है।

**पंचम अध्याय** में शोध सारांश एवं निष्कर्ष को वैज्ञानिक तरीके से प्रस्तुत किया कया है।

अंत में शोध कार्य की समाप्ति पर सम्पूर्ण रूप से कहा जाए तो शोधार्थी ने क्रमबद्ध तरीके से उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध कार्य के सभी गुणात्मक पक्षों को ध्यान में रखते हुए यह कार्य शिक्षाशास्त्र में पी–एच०डी० उपाधि के योग्य है। इनके सभी प्रयासों को देखते हुए मैं इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

24.00.21

प्रो0 (डॉ0) रजनी रंजन सिंह
विभागाध्यक्ष, शिक्षा शास्त्र विभाग
डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,
लखनऊ